नोट:- वर्तमान समय दादी जानकी जी के क्लासेस की जो देश-विदेश में लहर चल रही है, उसका सारांश आपके पास भेज रहे हैं।

निमित्त आत्माओं के कर्तव्य (दादी जानकी जी की क्लासेस से)

1) ईश्वरीय कार्य में निमित्त आत्मायें औरों को भगवान के समीप ले आती हैं वह स्वयं हल्की रह औरों को भी हल्के रहने की प्रेरणा देती हैं।

2) सच्चा निमित्त हमेशा सकारात्मक समाधान खोज लेता है।

3) सकारात्मक निमित्त सकारात्मक भावनायें और वृत्ति रखता है जिससे वातावरण शक्तिशाली बनता है।

4) निमित्त आत्माओं की इमानदारी औरों को इमानदार बनने में मदद करती है।

5) निर्मान निमित्त आत्मा हमेशा 'पहले आप' करती है।

6) समर्थ निमित्त आत्माओं के पास शुभ भावना और स्नेह की भावनाओं का भण्डार न सिर्फ अपने प्रति होता बल्कि अन्य सभी प्रति तथा वातावरण के प्रति भी भरपूर होता है।

7) स्नेही निमित्त आत्मायें स्नेह सम्पन्न रह औरों की सम्भाल के साथ स्नेह की लेनदेन करती हैं।

8) निर्मल निमित्त आत्मायें सदा सकारात्मक बनी रहती हैं।

9) गुप्त निमित्त आत्मायें सदा न्यारी और प्यारी बनी रहती हैं।

10) हर्षित निमित्त आत्मायें स्वयं सदा खुशनुम: बन हर खुशियाँ फैलाती हैं।

शुद्ध संकल्पों की कमाल

1) आन्तरिक परिवर्तन से शुद्ध संकल्पों की शक्ति का अनुभव करने की अब अति आवश्यकता है।

2) हमें शुद्ध (पवित्र) संकल्पों की शक्ति को पहचानना होगा।

3) शुद्ध और शक्तिशाली संकल्प भी बहुत बड़ी कमाल कर सकते हैं।

4) स्वयं के लिए शुद्ध संकल्प रखें।

5) सभी के लिए सदा शुभ और शुद्ध संकल्प रखें।

6) आत्म चिन्तन के शुद्ध विचारों से नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदला जा सकता है।

7) जब मन शुद्ध विचारों में व्यस्त होगा तो अन्य किन्हीं विचारों के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं होगा। जब कोई चीज पूरी तरह से भरपूर होती है तब एक बूंद भी उसमें बढ़ाई नहीं जा सकती अन्यथा वह बह जायेगी।

8) ऐसी स्थिति बनायें जो संकल्प मात्र भी किसी नकारात्मकता का वार न हो।

9) अपने मन की मालिक आत्मा एक सेकेण्ड में अपने शुद्ध विचारों द्वारा जैसा चाहें वैसा वातावरण बना सकती है।

10) श्रेष्ठ और शक्तिशाली आत्मा कहीं भी शक्तिशाली वातावरण बना सकती है।

11) शुद्ध विचारों का ऐसा घेराव डालो जो कमजोर आत्मायें भी उसमें आ जायें।

12) औरों की सेवा करना अर्थात् उनके प्रति शुद्ध संकल्प रखना।

13) आप अपने शुद्ध संकल्पों से औरों को अपने करीब ला सकते हो, आपके सम्बन्ध अच्छे होंगे।

14) शुद्ध संकल्पों से आप औरों में परिवर्तन ला सकते हो।

15) शुद्ध संकल्पों की बूंद से भी परमात्म मिलन के आनन्द का अनुभव किया जा सकता है।

16) परमात्मा तुम्हें अपने ही स्वरूप में देखना चाहते हैं इसलिए दृढ़ता और परिवर्तन की शक्ति को अपना साथी बनाओ चाहे कोई आपको कितना ही नकारात्मकता क्यों न दे।

17) चेक करो - सारे दिन में मेरे मन में अधिकतर शुद्ध संकल्प और शुभकामनाओं के संकल्प हैं या मेरा ज्यादातर समय दूसरों के बारे में सोचने में वेस्ट होता है।

18) जो हमेशा शुद्ध संकल्प करते हैं वो सदा हल्के रहते हैं।

19) जहाँ शुद्ध विचारों का विचरण है वहाँ चिन्तायें स्वयं समाप्त हो जाती हैं।

20) व्यर्थ विचार व्यक्ति को कमजोर बना देते हैं। अगर कभी बहुत व्यर्थ संकल्प चले तो कुछ सकारात्मक या ईश्वरीय ज्ञान पढ़कर उस पर चिन्तन करना चाहिए, जिससे कोई न कोई प्वाइन्ट आपका ध्यान आकर्षित कर लेगी और स्वत: ही शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा होती जायेगी और व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे।

21) अगर आप व्यर्थ संकल्पों को तुरन्त कट नहीं करते हैं तो आप उनसे प्रभावित होते रहेंगे। तुम्हें एक सेकेण्ड से भी पहले व्यर्थ संकल्पों को कट करना होगा। उन्हें शुद्ध संकल्पों की शक्ति से समाप्त कर दो।

22) अगर शुद्ध संकल्पों में व्यर्थ की मिलावट रहेगी तो शक्तिशाली नहीं बनेंगे। संकल्पों की उत्पत्ति में सफलता नहीं पा सकेंगे क्योकि व्यर्थ विचारों से सफलता नहीं मिल सकती।

23) अपने शुद्ध संकल्पों की पूर्ति या प्राप्ति के लिए हमें अन्दर से स्थिर रहना होगा।

24) ईश्वरीय पुरुषार्थ का लक्ष्य ही है शुद्ध संकल्प, बोल और कर्म। इसमें समय जरूर लगता है, कोई भी ईश्वरीय जन्म लेते ही इसे तुरन्त नहीं कर पाते हैं।

परमात्मा की सच्ची निमित्त आत्मा

(दादी जानकी जी)

अन्तर्मुखी बन शान्ति में रहो। शान्ति से शक्ति मिलेगी और फिर आप दादियों जैसे बन जाओगे। अनावश्यक, फालतू व्यर्थ बातें सोचना, बोलना और सुनना ना केवल भूल है बल्कि बड़ा पाप है। मुख्य बात है स्वयं को देखना ना कि औरों को। औरों को देखने से व्यर्थ में जाते हैं। व्यर्थ विचार, दूसरों के बारे में सोचना उन्हें उल्हना देना, मम्मा बाबा जैसे बनने के हमारे लक्ष्य में बाध्य रूप बन जाता है। भगवान कभी नहीं कहते यह ऐसा है, वो वैसा है। बेहद प्यार से वह हमें अपना बना लेता है।

अब इस समय समाने की शक्ति की आवश्यकता है। पुरानी बातें जो लोगों ने या हमने की हैं सबकुछ समेटना होगा। जब हम कुछ बातों को दबाते हैं तब उसका प्रभाव हमारे दिल पर पड़ता है। हमारे में 99 प्रतिशत कुछ न कुछ दिल में दबाते रहते हैं। कहने की कुछ इच्छा नहीं होती है क्योंकि हम सोचते हैं कि कहने से कुछ फायदा नहीं होगा या कुछ फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन कोई भी बात अपने दिल में रखने से दिल भारी होती रहती है। जब हम अपने ही दुख और तकलीफों में फंसे हुए रहते हैं तब हमें हिम्मत नहीं रहती है। हम सेवा नहीं कर सकते हैं और खुशियों में नाच भी नहीं सकते हैं। औरों को भी खुशियों में नचा नहीं सकते हैं। तो अपने दिल में कोई बात मत रखना सिवाए दिलाराम के। अगर आप मेरे जैसी जीवन चाहते हो तो किसी को भी देखो या सुनो नहीं सिवाए बाबा के।

बीती को चितवो नहीं। भूल जाओ और जाने दो। अगर तुम्हारे में घृणा का भाव और उसी दृष्टि से औरों को देखते हो इसका मतलब है कि तुम्हारे में अहंकार है। कोई कहते हैं मैंने उसको माफ कर दिया लेकिन फिर भी उसने अपने आपको नहीं बदला, यह अहंकार है। अगर आपमें सहिषुणता, रहम और क्षमा भाव है तो सभी के प्रति आपकी दृष्टि सदा कल्याण की होगी। दूसरों को दु:ख नहीं देंगे, ना ही दु:ख लेंगे। मित्रत्व का भाव सदा बना रहे। सच्ची भावनाओं के साथ हम बातों को भूल जायें और माफ करते जायें।

बाहर की चीज़ों को अन्दर मत जाने दो। और जो भगवान हमें अन्दर से भरपूर कर रहा है उसे बाहर मत जाने दो। जब कोई भीतर से बहुत स्वच्छ और शान्त होता है तब उसके संकल्प सदा श्रेष्ठ होते हैं। अपने दृष्टिकोण को इतना श्रेष्ठ बनाओ कि अपने आसपास के वातावरण को अपनी वृत्ति से शक्तिशाली बना सको। फिर कोई भी नकारात्मक या व्यर्थ विचार इमर्ज नहीं होंगे। नकारात्मक विचार नहीं हैं, उसकी निशानी है कि उनमें कोई विकार या पाप का अंश भी नहीं रहेगा।

अपने हृदय को रहम और इमानदारी से भरपूर रखो। विशाल दिल और शक्तिशाली हृदय, दूसरों के लिए कभी कोई बुरी भावना अपने मन में नहीं रखो और ना ही अपने प्रति ऐसा कोई भाव रखो। इसके बजाए अपने हृदय को सहिषुणता, रहम, प्यार और इमानदारी से भरपूर कर दो। शुभ भावना और शुभकामना कमाल कर देती है। हमारी भावनायें सबके लिए सदा ऐसी ही बनी रहें। परमात्मा हमें इसके लिए सदा मदद देता रहता है ताकि हमारा हृदय सदा ऐसा बना रहे। कोई भी बात आवे तुरन्त कहो, मुझे इस पर विजय पानी है, मुझे कर्मातीत बनना है। चाहे आपको कितनी भी परीक्षाओं का सामना करना पड़े - विशाल दिल, रहम दिल से कुछ समय के बाद सबकुछ ओके हो जायेगा।

सशंय कुछ भी करने से दूर कर देता है। प्रश्न, उत्तर पाने का इन्तजार करवाते हैं। अगर तुम ध्यान देते हो तो तुम्हारे हर प्रश्न का जवाब मिल जाता है। अपने आपको लूज नहीं होने दो। सदा सत्य का संग रखो और सदा बाबा के साथ का अनुभव करते रहो। एक बाबा ही मेरा सहारा है। अंशमात्र भी किसी मनुष्य के ऊपर मेरा आधार न हो। किसी भी

समय कुछ भी हो सकता है। शरीर छोड़ते समय मैं बाबा की याद का अनुभव करती रहूँ, इस बात की धुन लगी रहे।

तुम्हारी धारणाओं से तुम्हारे ज्ञान-योग का पता चलता है। ज्ञान-योग तुम्हारे जीवन में चेहरे से दिखाई दे। जब हमारे में इमानदारी, नम्रता, धैर्यता और गम्भीरता अन्दर से होगी तब चेहरे पर चलन में और व्यवहार में स्वत: ही वो दिखाई देगी। यही बातें हैं जो बाबा के करीब और बाप समान बनने में मदद करती है। जब तुम्हारे में ज्ञान, योग, धारणा है तब यज्ञ और बाबा के द्वारा तुम्हें अधिकाधिक प्राप्ति होती रहेगी और कोई कमी किसी भी रूप में नहीं रहेगी। चारों ही सब्जेक्ट में आगे बढ़ने की निशानी है कि तुम सब प्रकार के बोझों से मुक्त महसूस करोगे। ज्ञान हमें लाइट बनाता है, योग से हमें शक्ति मिलती है। धारणा हमारे जीवन में सबकुछ सहज कर देती है और सेवा से हमारा भाग्य बनता है। बाबा ने ज्ञान, शान्ति, पवित्रता, शक्ति और स्नेह के स्तम्भ बनकर अपने आपको यादगार बनाया। हमें भी इन सबका स्तम्भ बनना होगा।

पूरी दुनिया पर इस समय परछाया पड़ी हुई है और लोग उसके प्रभाव में हैं। यह परछाया लोगों को बेसुध बना देती है। क्या सही है, क्या गलत है इसकी भी समझ नहीं रहती है। दुनिया के लोग जो कर रहे हैं, उनसे कुछ अलग हमको करने की जरूरत है। ऐसा कुछ न करें जिससे दु:ख और अशान्ति हो। हमें अपने आपको उस परछाया से बचाना होगा ऐसा कुछ करना होगा जो उस परछाया का प्रभाव हम पर न हो। हमें अपने आपको भगवान की छत्रछाया में रखना होगा।

बाबा की हमसे आश है कि हम सदा उपराम बने रहें इसलिए छोटी-छोटी बातों में अपने मन और बुद्धि को उलझाओ नहीं। किसी चीज़ का आकर्षण न रहे और न ही किसी चीज़ की उलझन बनी रहे। तब तुम्हारे समय और शक्ति की बचत होगी और तुम सफलता के सितारे बनोगे। ऐसा क्यों? कैसे होगा? ऐसा पूछने के बजाए विश्वास रखो कि बाबा मेरे द्वारा करायेगा। मुझे चिन्ताओं से मुक्त निश्चिन्त रहना है।

तुम्हारे द्वारा बाबा जो कराना चाहता है उसमें ही सफलता है। सफलता तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। केवल तुम्हें अहंकार और विकार रहित रहना होगा। यह तुम्हारा कर्तव्य है। दूसरों के लिए एक प्रैक्टिकल उदाहरण स्वरूप बन जाओ जिससे वो सोचे कि मुझे भी इन जैसा बनना है। उन्हें वरदानों का दान दो, ऐसी पालना दो जो वो बाबा के वारिस और माइक बने और भागकर अक्टूबर में बाबा से मिलने के लिए आ जायें। आप सभी इसके लिए निमित्त हो। निमित्त भाव और भावना से सदा सेवा में उपस्थित रहो। सबको स्नेह से एकता के बन्धन में बांधो। फिर 'मैं', 'हम' बन जायेगा और हम सब एक। हम एक परिवार हैं, भाई और बहनें।

तुम्हारे पास जो कुछ भी है समझो बाबा का है। बाबा हमें आगे बढ़ा रहा है तो सबकुछ बाबा के आगे समर्पण कर दो। जैसे ब्रह्मा बाबा ने किया। हर श्वांस में बाप समाया हुआ हो, सबके लिए स्नेह समाया हुआ हो। बाबा का संकल्प है कि ऐसे उदाहरणमूर्त बनें जो बाप की प्रत्यक्षता हो और बाप की कमाल सारी दुनिया देखे। सबकी आंखें खुल जायें, उनकी बुद्धि बाप की तरफ जाये और वो अपने आपको बदल सकें।